समाधिस्थ मुनिराजो के चरण विराजमान करने की आगम सम्मत परम्परा

- निर्मलकुमार जैन, विदिशा

इस काल की प्राचीन, अति प्राचीन परम्परा में मुनिराजों (आचार्य उपाध्याय एवं साधु) के समाधिस्थ होने के उपरान्त उनके चरण युगल को प्रतिष्ठापूर्वक विराजमान कर उनके प्रति श्रद्धा प्रगट करते हुये गुरु चरणों में भक्ति प्रदर्शित करने का उल्लेख प्राप्त होता है। चन्द्रगुप्त मौर्य और उनके गुरु भद्रबाहु का उल्लेख श्रवणबेलगोल की भद्रबाहु गुफा से प्राप्त होता है जहाँ पर आचार्य भद्रबाहु के समाधिस्थ होने पर उसी गुफा में चरण स्थापित हुए। चन्द्रगुप्त ने भी मुनि अवस्था में उसी स्थान पर रहते हुये कठोर साधना की, लगभग ऐसे ही गुरु शिष्य के मध्य के अनेकों उल्लेख प्राचीन काल से वर्तमान समय तक प्राप्त होते रहते हैं। देश के अनेक भागों में समाधिस्थ मुनिराजों के चरण युगल ही दृष्टव्य होते हैंऔर यही आगम सम्मत परम्परा है।

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि परिषद् के अध्यक्ष डॉ. श्रेयांसकुमार जैन ने अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्रि परिषद् के २०२४ के वार्षिक अधिवेशन में अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में समाधिस्थ मुनिराजों की प्रतिमाएँ विराजमान करने का सप्रमाण निषेध किया है, उनका मानना है कि यह आगम सम्मत परम्परा नही हैं। उन्होंने आचार्य श्री नेमीचन्द्र कृत प्रतिष्ठा पाठ के अध्याय १७ के पृष्ठ ७६५ पर अंकित श्लोक का उल्लेख करते हुये कहा-

ऐदंयुगीनाचार्य दिषु पूर्वाचार्य गुणान संतावीक्ष्य।
तत्पादुका द्वयमाचार्यादेः प्रतिष्ठावत् प्रतिष्ठापयेत् ।।

आधुनिक सम्पूर्ण आचार्यादिकों में पूर्वाचार्यों के गुण हैं अथवा नही हैं इसका सम्पूर्ण अवलोकन करके उनके चरण युगल अर्थात् चरण पादुकाएँ आचार्यादिकों को प्रतिष्ठा के समान साक्षत प्रतिष्ठापित करना चाहिए।

उन्होंने आगे कहा कि पंडित आशाधर जी भी अपने प्रतिष्ठा ग्रन्थ के अध्याय ६ पृष्ठ १३३ पर श्लोक संख्या ३६ में लिखा है –

आचार्यदि गुणान् नित्यं सतां वीक्ष्य यथायुगम्।
गुर्वादेः पादुकेभक्तया तन्नासविधिना न्यस्येत ।।

इन शास्त्रीय उद्धरणों को पढ़-समझकर शास्त्रिपरिषद् अनुरोध करती है कि **वर्तमान में जो आचार्योदिकों की उन्हीं के आकार की प्रतिमाएँ जगह–जगह विराजमान हो रही हैं, उन्हें न**

किया जाए। इससे भी अधिक विडम्बना का विषय है कि कहीं-कहीं आर्यिकाओं की मूर्तियाँ भी बनवाकर विराजमान कर दी गई है और उन प्रतिमाओं का अभिषेक भी हो रहा है।

गत कुछ वर्षों से कुछ माह पूर्व तक श्रमण संस्कृति के वर्तमान काल के श्रेष्ठ एवं श्रेष्ठतम आचार्यों का समाधिस्थ होना समाज एवं संस्कृति की अपूर्णनीय क्षति है जो अत्यन्त दुखद हैं। इन आचार्यों में सम्पूर्ण समाज की अगाध श्रद्धा रही। इस कारण अनेक स्थानों पर आचार्यों की प्रतिमाएँ स्थापित होने की पहल हो रही है।

इसी प्रसंग में मैंने दिनांक ११ सितम्बर २०२४ को पूज्यवर श्री प्रमाणसागर जी से शंका समाधान में प्रश्न किया एवं मार्गदर्शन चाहा तो उन्होंने समाधिस्थ आचार्य विद्यासागरजी की प्रतिमा विराजमान करने का स्पष्टता पूर्वक निषेध करते गुरु चरणों में अपनी अगाध श्रद्धा भक्ति प्रगट करते हुये कहा कि मन तो करता है कि ऐसा कर लिया जाये (प्रतिमा विराजमान करवा दी जाय) लेकिन **गुरु जी ने अनेक बार कहा कि किसी भी आचार्य मुनि की हूबहू आकृति नहीं बनाना चाहिए। उनकी मूर्ति प्रतिष्ठित नहीं करना चाहिए वे कहते थे (आचार्य श्री विद्यासागर जी कहते थे), गाल धंसे आँखों में झुर्रिया पड़ी यह बिल्कुल नहीं बनाएं तो समचर्तुस्य संस्थान जैसे भगवान् की मूर्तियाँ और वो कहते थे इतने सालों में इतने महान्- महान् आचार्य हुए। इक्का-दुक्का प्रतिमाएँ हैं। इस तरह से यदि प्रतिमाएँ बनने लगी तो परम्परा दूषित होने लगेगी। भगवान् गौण हो जाएंगे।** पूज्य प्रमाणसागर जी ने आगे कहा - गुरुदेव ने (आचार्य श्री विद्यासागर जी ने) **ज्ञानसागर जी की मूर्ति बनकर आयी थी स्थापित नहीं होने दी तब उन्होंने कहा था कि यह उचित नहीं।** अनेक बार उन्होंने यह बात स्पष्टतः से कही है, और यह बात हमारे जेहन में हैं।

डॉ. अमितकुमार जैन ने भी पूज्य प्रमाण सागर जी के कथन से सहमति जताते हुये आचार्य श्री के साथ वर्तालाप का संस्मरण बताते हुये लिखा - **मेरी भी आचार्य श्री विद्यासागर जी इस सम्बन्ध में चर्चा हुई थी उनका कहना था कि मुनि आचार्य की तदाकार मूर्ति नहीं बनाना चाहिए उन्होंने (आचार्य श्री ने) बताया था कि दो स्थानों पर आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज की मूर्ति बनकर आ गई थी पर मैंने आशीर्वाद नहीं दिया और वे आज तक नहीं लगी।**

मेरा लक्ष्य आगम परम्परा, गुरु परम्परा, प्राचीन परम्परा को परिपेक्ष्य में सत्य को उद्घाटित करना है सबको चाहिए परम्परानुसार गुरुओं के चरण युगल प्रतिष्ठा पूर्वक प्रतिष्ठापित करा कर अपनी आस्था प्रगट करें।